दीक्षित राज बोहरा

बैंगलोर

शीर्षक – मेरा भारत, मेरी पहचान।

लहराता तिरंगा कहता है भारत की वीर कहानी,
हमारे ध्वज के हर कण में बसी है शहीदों की कुर्बानी।

केसरी रंग ध्वज के सिर पे है लहराता,
शक्ति और साहस का प्रतीक है कहलाता।
कण–कण में बसा है जिन शहीदों का बलिदान,
तिरंगे में, केसरी रंग की यही है पहचान।

जिनके साहस ने किया देश के दुश्मनों का पतन,
उन्हीं की शक्ति से सुरक्षित है आज हमारा वतन।
तैनात रहते हैं हर घड़ी चाहे सुबह हो या शाम,
ऐसे वीर जवानों को तहे दिल से है मेरा सलाम।

सफेद रंग शांति और अमन सिखलाता,
सत्य और सद्भाव का दीप जलाता।
निर्मल विचारों से बढ़ता है देश का मान,
तिरंगे में, सफेद रंग की यही है पहचान।

जिन वीरों ने जलाई थी आज़ादी की क्रांति,
उन्हीं के त्याग से कायम है देश में शांति।
हँसते–मुस्कुराते हुए कर दिया जीवन कुर्बान,
तभी गुलामी से आज़ाद हुआ हिन्दुस्थान।

हरा रंग हरियाली की खुशबू फैलाता,
पावन मिट्टी में शहीदों की यादें सहलाता।
जिसे देखकर प्रसन्न हो जाता है किसान,
तिरंगे में, हरे रंग की यही है पहचान।

सीना तानकर सीमा पर जो खड़े थे,
मातृभूमि के लिए दुश्मनों से लड़े थे।
हर जंग को जीता, बाँधकर सिर पर कफ़न,
अंततः मातृभूमि की गोद में हो गए दफ़न।

जैसे हर स्त्री के माथे की बिंदी है एक श्रृंगार,
वैसे ही अशोक चक्र स्थापित करता है धर्म संसार।
देश के सैनिक चक्र के समान बने हैं ऐसी ढाल,
जो रखते है तिरंगे और देश को खुशहाल।

घर लौटा वीर जवान, जब तिरंगे में लिपटकर
रोया पूरा परिवार एक दूसरे की बाँहों सिमटकर।
अपनी अंतिम साँस तक कहते रहे हर जवान,
“मेरा भारत महान, यही मेरी पहचान।”
“मेरा भारत महान, यही मेरी पहचान।”